बकरी पालनः एक प्रभावी आय का विकल्प
कृषि कुंभ (सितंबर, 2022), खण्ड 02 भाग 04, पृष्ठ संख्या 31–34

बकरी पालनः एक प्रभावी आय का विकल्प

दशरथ सिंह चूण्डावत

कृषि स्नातकोतर (पशु उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग)

राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर भारत।

भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसकी अर्थव्यवस्था में पशुधन एवं पशुपालन का विशेष योगदान है, बकरी पालन हमारे भारत में बहुत पुराना व्यवसाय है। बकरी पालन विशेष रूप से दुग्ध एवं मांस उत्पादन हेतु किया जाता है, बड़े पशुओ जेसे गाय एवं भैंस के लिए अधिक रखरखाव की आवश्यकता होती है। इसी की तुलना में बकरी पालन काफी सस्ता एवं सरल व्यवसाय है, हमारे देश में कई प्रकार की जलवायवीय विषमताये पाई जाती है एवं इन्ही कारणों से बकरी पालन एक उपर्युक्त व्यवसाय है। बकरी पालन आसानी से सार्वजनिक चरागाहों, नदियों के आस पास एवं बेकार पड़ी जमींन पर चराकर किया जा सकता है इससे इसका खर्च आसानी से कम किया जा सकता है।

बकरी पालन मुख्य रूप से दूध, मांस एवं बालों के लिए किया जाता है। हमारे भारत पाई जाने वाली सभी बकरी की नस्ले उत्पादन में निम्न क्षमता वाली है परन्तु इन नस्लों में उच्च एवं कम तापमान को सहन करने की, रोगों के प्रति लड़ने की क्षमता पाई जाती है। प्रति वर्ष बकरी के दूध एवं मांस से अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है साथ ही इसकी लागत भी बहुत कम आती है। बकरी की मींगनी एवं मूत्र बहुत अच्छी जैविक खाद मानी जाती है। फसल काटने के उपरांत बचे हुए अपशिष्ट का उपयोग आसानी से बकरी को चराने के लिए उपयोग किया जा सकता है एवं इनसे प्राप्त खाद मृदा का उपजाऊपन बरकार रखने में बहुत सहायक है। समाज का वह वर्ग जिसके पास बिलकुल भी जमीन नहीं है वो इस व्यवसाय को अपना कर अपनी आजीविका प्राप्त कर सकते है द्य बकरी पालन के निम्न फायदे है:

1. बकरी द्वारा अच्छी गुणवता का दूध एवं मांस प्राप्त होता है जो की कुपोषण जेसी समस्याओ को हल करने में बहुत सहायक है।
2. इससे प्राप्त होने वाले चमड़े एवं बाल (मोहर) से बहुत कीमती चीजे बनायी जाती है।
3. इससे प्राप्त होने वाली मींगनी बहुत ही उपयोगी खाद है जो की भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने में बहुत सहायक है।
4. बकरी एक ब्यात में एक से अधिक बच्चे पैदा करती है।
5. बकरी को पलने हेतु किसी विशेष रख रखाव की आवश्यकता नहीं होती है।
6. इससे पुरे वर्ष भर निरंतर आय प्राप्त की जा सकती है द्य ये सभी प्रकार की जलवायवीय स्थिति में आसानी से पाली जा सकती है।
7. बकरी पालन से महिला वर्ग का विशेष जुडाव रहा है, इसके पालन से महिलाओ को स्वयं एक आजीविका का साधन प्राप्त होता है।
8. बकरी अपना पोषण पेड़ पोधो के उपरी हिस्सों से प्राप्त करती है इसी कारण इसकी अन्य

पशो के साथ भोजन के प्रतिस्पर्धा बहुत कम होती है।

बकरी की प्रमुख नस्लों से परिचय

भारत में लगभग 35 प्रकार की बकरियों की नसले पाई जाती है, प्रत्येक नस्ल अपने विशेष गुण के लिए प्रसिद्ध है, हमारे ग्रामीण क्षेत्र में भी विभिन्न प्रकार की नस्ले उपलब्ध है जो उप नस्लों में गिनी जाती है। भारत में पाई जाने वाली प्रमुख बकरी की नस्ले निम्न है:

1. **जमुनापारी:** यह बकरी की प्रसिद्ध प्रमुख नस्लों में एक है जो की अपने अच्छे गुणों के लिए हर जगह प्रसिद्ध है। यह बड़े आकार का पशु होता है जिसका रंग प्राय सफेद होता है।

कई बार इसके ऊपर सफेद धब्बे पाए जाते है। इनमे उभरी हुई नाक पाई जाती है जिसे "रोमन नाक" भी कहा जाता है। यह दुग्ध एवं मांस उत्पादन दोनों उद्देश्यों से पली जाती है। इनका उत्पति स्थल उत्तर प्रदेश का इटावा जिला है एवं ये इसके आस पास के इलाको में बहुतायत मिलती है। इनके व्यस्क नर का वजन 45 से 50 किग्रा होता है एवं मादा का 35 से 40 किग्रा पाया जाता है, ये प्रतिदिन 1 से 1.5 किग्रा दुग्ध उत्पादन करती है।

2. **बरबरी:** यह मुख्यत अफ्रीका से उत्पतित नस्ल है परन्तु यह भारत में मुख्य रूप से पाली जाती है। इसे "शहरी बकरी" के नाम से जाना जाता है क्योकि इसे पलने हेतु कम जगह की आवश्यकता होती है जिसके कारण शहरी इलाको में इसे आसानी से पाला जा सकता है।

इसमें पीछे मुड़े हुए सिंग पाए जाते है एवं कान भी छोटे होते है। ये एक ब्यात काल में 90 से 100 किग्रा दुग्ध उत्पादन करती है।

3. **सिरोही:** यह मध्यम आकार की नस्ल है। इसकी त्वचा का रंग भूरा होता है एवं शरीर के ऊपर गहरे भूरे एवं सफेद धब्बे पाये जाते है। यह

दुग्ध एवं मांस उत्पादन दोनों में अच्छी है परन्तु विशेषत यह मांस के लिए प्रसिद्ध है। इसका वजन 25– 30 किग्रा पाया जाता है। यह राजस्थान के सिरोही, उदयपुर, अजमेर एवं समीपवर्ती इलाको में पाई जाती है।

4. **मारवाड़ी:** यह राजस्थान के शुष्क क्षेत्र में बकरी की प्रमुख नस्ल है जो की रायका एवं देवासी समुदाय द्वारा अधिकतर पाली जाती है। यह भोजन हेतु समीपवर्ती इलाको एवं राज्यों में भ्रमण करती है। यह सफेद से काले रंग की होती है। यह अधिक गर्मी सहनशील एवं कम पानी में आसानी से जीवनयापन कर सकती है। इनमे नर एवं मादा का क्रमशः वजन 20 से 25 एवं 25 से 30 किग्रा पाया जाता है। यह नस्ल प्रमुख रूप से राजस्थान के जोधपुर, बीकानेर, पली, जैसलमेर एवं बाड़मेर में पाई जाती है।

5. **देवगढ़ी:** यह नस्ल राजस्थान के राजसमन्द, उदयपुर एवं भीलवाडा के समीपवर्ती इलाको में पाई जाती है। इसका रंग भूरा होता है जिस

पर गहरे धब्बे पाए जाते है। इनका वजन 20 से 30 किग्रा होता है। इसे मांस एवं दूध दोनों के लिए पाला जाता है।

बकरियों के लिए आहार प्रबन्धन:

पशुओ के अच्छे आर्थिक उत्पादन एवं स्वस्थ रहने के लिए आहार की अहम् भूमिका रहती है। बकरी भी गाय एवं भेंस के सामान जुगाली करने वाला पशु है परन्तु यह अपना भोजन भिन्न तरीके से ग्रहण करता है। बकरिया विशेष रूप से पेड़ पोधो के उपरी हिस्से से भोजन ग्रहण करती है जो की अन्य हिस्सों से अधिक गुणशाली होता है। प्रतिदिन बकरी के लिए उसके कुल शरीर भर का ४–५ प्रतिशत सुखा प्रदार्थ आवश्यक होता है। बकरी आहार में मुख्य रूप से दो चीजे शामिल की जाती है जो की दाना एवं चारा है।

बकरी के भोजन हेतु चारा मुख्य रूप से विभिन्न स्त्रोतो से प्राप्त किया जा सकता है द्य चारे हेतु खरीफ एवं रबी काल में उगने वाली फसले जेसे ज्वार, जौ. बाजरा आदि का उपयोग किया जा सकता है द्य इन चारो का उपयोग हरे चारे के रूप में, हे बना क्र या सुखे भूसे के रूप में किया जा सकता है द्य इन चारो में नाइट्रोजन बहुत कम मात्रा में पाई जाती है जिसके कारण प्रोटीन के पूर्ति हेतु अन्य स्त्रोतों का उपयोग करना चाहिए। बरसीम, रिजका, ग्वार एवं लोबिया का हरी अवस्था में बकरियों के लिए चारे के रूप में उपयोग किया जा सकता है। इनमे अच्छी मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है एवं बकरी इसे बड़े चाव के साथ खाती है द्य बकरियों के आहार हेतु बेर, नीम, खेजड़ी, देशी बबूल, पीपल एवं जरबेरी की पत्तियों का भी उपयोग किया जा सकता है। चरागाहों में उगने वाली धामन, अंजन एवं सेवन घास भी बकरियों के लिए उपयोग की जा सकती है परन्तु इनकी चराई हेतु उचित प्रबंधन की आवश्यकता होती है।

बकरी के संतुलित आहार में दाने का भी बहुत बड़ा योगदान है। दाने के रूप में जई, जौ, बाजरा, मक्का आदि का उपयोग किया जा सकता है। एक दुधारू बकरी को प्रतिदिन 300 से 400 ग्राम दाने की आवश्यकता होती है। ब्याने के 1 से 1.5 माह पूर्व 250 से 300 ग्राम प्रतिदिन दाना उपलब्ध करवाना चाहिए जिससे की आगामी उत्पादन में फायदा प्राप्त हो सके।

बकरियों के लिए आवास प्रबंधन

सामान्यत बकरियों को विशेष आवास प्रबंधन की आवश्यकता नही होती है लेकिन अगर आवास व्यवस्था पर उचित ध्यान दिया जाये तो इनका उत्पादन आसानी से बढाया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रो में बकरियों को पदों को निचे बाँध कर या फिर चारे एवं भूसे से कच्चा आवास प्रदान करके पाला जाता है जिसका सामान्य उद्देश्य केवल सर्दी एवं बारिश से इनकी रक्षा करना है। बकरियों को गिला एवं सना हुआ स्थान पसंद नही होता है उन्हें सूखे स्थान में रहना पसंद होता है। उनके आवास के चयन हेतु विभिन्न प्रकार की बाते ध्यान रखना आवश्यक होता है। उनका आवास जमींन के ताल से थोडा उठा हुआ होना आवश्यक होता है ताकि पानी ठहरने की समस्या न पैदा हो। आवास के चारो और पेड़ होना जरुरी है जिसके कारण गर्मी के समय में राहत प्राप्त हो सके। इन बाते क साथ साथ इनका बाड़ा एक सुरक्षित जगह पर होना बहुत आवश्यक होता है जिससे उनकी बाहरी जंगली जानवरों से रक्षा हो सके।

प्रत्येक बकरी को 8 से 10 वर्ग फूट स्थान की आवश्यकता होती है। प्रतेयेक बाड़े में भोजन हेतु

नांद एवं पानी की उचित व्यवस्था बहुत आवश्यक होती है। समय समय पर इनकी सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए। बकरों को प्रजनन के समय के अलावा हमेशा पृथक आवास में रखना चाहिए द्य एक व्यस्क बकरी को भोजन के लिए 40 से 45 सेमी एवं बच्चे को 30 से 35 सेमी स्थान की आवश्यकता होती है। आवास में ब्याने वाली बकरी के लिए अलग आवास बनाया जाना चाहिए जिसमे ब्याने के कुछ दिनों पहले बकरी को रखा जा सके। इस आवास का फर्श नरम होना बहुत आवश्यक होता है ताकि वह आसानी से बैठ सके। नवजातो को रखने के लिए साफ एवं हवादार स्थान का उपयोग करना चाहिए। आवास की समय समय पर सफाई एवं निरक्षण कीया जाना चाहिए।

प्रजनन प्रबंधन

उचित प्रबंधन व्यवस्था अच्छी आय का मूल आधार है। उचित समय पर प्रजनन से उत्पादन में भी वृद्धि होती है एवं साथ साथ अच्छा उत्पादन भी प्राप्त होता है। बकरिया सामान्य रूप से एक वर्ष की आयु में परिपक्व हो जाती है। अगर इन्हें 1.5 वर्ष की आयु तक गर्भित करवाया जाये तो उचित रहता है। बकरियों में मदकाल की अवधि 12 से 36 घंटे तक रहती है एवं मदचक्र 21 दिन का होता है। मद में आने उप उचित लक्षणों का अवलोकन कर गर्भित करवाने से गर्भित होने की सम्भावनाये बढ जाती है। ग्रामीण क्षेत्रो में एक झुण्ड में 1 से 2 बकरे रखे जाते है। लगभग 25 से 30 बकरियों के लिए एक बकरा उपर्युक्त रहता है। बकरियों में गर्भकाल 145 से 150 दिन होता है। इस समय उन्हें अच्छी चराई एवं भोजन प्रदान करना चाहिए जिससे की आगामी उत्पादन में फायदा मिल सके साथ साथ सवस्थ बच्चे पैदा हो सके द्य गर्भावस्था के अंतिम 1 से 1.5 माह के समय उन्हें 250 से 300 ग्राम उपलब्ध करवाना चाहिए।

प्रजनन हेतु उचित गुणों वाला नर का चयन बहुत आवश्यक है क्योकि नर को समूह का आधा भाग माना जाता है, प्रजनन के लिए सदेव मजबूत, अच्छी नस्ल एवं स्वस्थ बकरे का उपयोग करना चाहिए। प्रजनन काल में बकरे को 400 से 500 ग्राम अतिरिक्त दाना प्रदान करना चाहिए, रात के समय बकरे को अलग आवास में रखना आवश्यक है ताकि उनको उचित आराम मिल सके जिससे उनकी गुणवत्ता बरकरार रह सके।

स्वास्थ्य प्रबंधन

बकरियों में सामान्य रूप से 10 से 15 प्रतिशत मृत्यु दर पाई जाती है। कभी कभी कई रोगों के कारण यह मृत्यु दर बढ़ जाती है। बकरियों में कई प्रकार के रोग पाए जाते है है जो विभिन्न कारणों से उत्पन्न होते है जैसे की विषाणु, जीवाणु, पोषक तत्व की कमी एवं कवक आदि। उचित समय पर अगर बकरियों के स्वास्थ के उपर ध्यान दिया जाये तो इससे होने वाली हानि से आसानी से बचा जा सकता है। बकरियों में होने वाले प्रमुख रोगों में से फडकिया, चेचक, खुर पका एवं मुह पका, निमोनिया, एवं आफरा प्रमुख है। अगर समय पर टिकाकारण एवं स्वास्थ्य प्रबंधन पर ध्यान दिया जाये तो इनका असर बहुत कम होगा।

निष्कर्ष

पशु पालन भारत की आय में एक बहुत विशेष योगदान है। प्रोटीन एवं अन्य उपयोगी पोषक तत्व की कमी को पूरा करने में बकरी का दूध एक उचित साधन है जिससे बहुत कम खर्चे के साथ पाला जा सकता है। विशेष रूप से महिला वर्ग की आय के लिए यह आय का प्रभावी साधन हो सकता है। बकरी के इन्ही अच्छे गुणों के कारण ही इसे "गरीब की गाय" एवं "बुरे समय का बीमा" कहा जाता है।